तीसरे चरण में दस षड़यंत्रकारियों ने नीचे लिखे अनुसार षड़यंत्र की योजना बनाई :

विरोधी दल यह बात अच्छी तरह जानता है कि मात्र बिजली चोरी का आरोप लगाने से भ्राता वीरेन्द्र देव दीक्षित को और आध्यात्मिक परिवार को पूरी तरह मिटाने का उनका लक्ष्य पूर्ण नहीं हो पाएगा। पूर्वनियोजित कार्यक्रम के अनुसार कम्पिल थाने में एक एफ.आई.आर. उसी दिन अर्थात् दिनांक 16-04-98 को (क्राइम संख्या 47/98) एक रेप केस भी तारा देवी के नाम से दर्ज करवाया गया। आरोप थे कि भ्राता वीरेन्द्र देव दीक्षित ने तारा देवी (उम्र 35 वर्ष) के साथ अप्रैल, 1997 में बलात्कार किया। पूरे 24 घण्टे भी नहीं बीते, दूसरे दिन ही अर्थात् ता.17-04-98 को एक और रेप केस (क्राइम नंबर 48/98) जया भारद्वाज के द्वारा दर्ज करवाया गया। जया भारद्वाज (उम्र 45 वर्ष) ने शिकायत की है कि भ्राता वीरेन्द्र देव दीक्षित तथा रवीन्द्र नाथ दास ने ता.20-03-97 को उसके साथ बलात्कार किया।

In the third phase, the ten conspirators' plan is appended:

The "Opposition Group" knows well that their aim to eradicate the entire "AVV family" along with Spiritual Brother Virendra Deo Dixit cannot be fulfilled by simply instigating a petty case like theft of Electricity. In execution and strengthening their preplanned conspiracies, they have managed instigation of an F.I.R on the same day, i.e., on 16th April, 1998, with Crime No. 47/98 by Tara Devi, aged 35 years, resident of Mathura with an allegation of rape. The allegation was that Spiritual Brother Virendra Deo Dixit has raped her in April 97, a year before. Not even 24 hours have lapsed, in execution of their conspiracy, another F.I.R with Crime No. 48/98 was lodged by Jaya Bhardwaj of Delhi on 17th April, 98. Jaya Bharadwaj has made an allegation that Spiritual Brother Virendra Deo Dixit as well another brother Ravindranath Das have raped her on 20-03-97.

यह भी आरोप लगाया गया कि हमारी आध्यात्मिक मुख्य बहन कमला देवी दीक्षित और हमारी आध्यात्मिक सहयोगी बहन शान्ता बहन ने उपर्युक्त तथाकथित बलात्कारों में सहायता करने में मुख्य भूमिका निभाई। जबकि काफी लंबे समय, लगभग 16 वर्ष से आध्यात्मिक साधना के लिए आध्यात्मिक विश्वविद्यालय में रह रहीं कन्याओं में से किसी ने, न ही उनके माता-पिता ने और न ही कंपिल-वासियों ने विद्यालय में किसी के द्वारा ऐसे किसी कदाचार के बारे में सोचा भी था। यह बहुत आश्चर्यजनक और मानव कल्पना से अतीत है कि भ्राता वीरेन्द्र देव दीक्षित, जो कि पवित्रता के मामले में इस धरती पर किसी दूसरे से कम नहीं हैं; उन्होंने उक्त प्रौढ़ महिलाओं के साथ बलात्कार किया होगा।

It was also alleged that a prominent spiritual sister Kamla Devi Dixit and another spiritual sister Shanta of the Ishwariya Family played an important role in the said

to have been occurred rape. While none of the young girls who were staying at Adhyatmik vidyalaya for considerably long time; around 16 years, for their spiritual enlightenment nor their parents nor any residents of Kampil village have ever thought of any such misconduct by anyone in the Adhyatmik vidyalaya, it is a wonder and beyond human probabilities that Spiritual Brother Virendra Deo Dixit , next to none on the earth in respect of purity, has resorted to sexual harassment with these middle aged ladies.

विरोधी दल के हाथों से उपलब्ध धन बल ने दो और महिलाओं - मीना कुमारी और रेणुका, को हमारे मुख्य भ्राता और मुख्य बहन और आध्यात्मिक सहयोगी बहन शान्ता कुमारी के खिलाफ दिनांक 28-4-98 तथा 14-5-98 को क्रमशः पुलिस शिकायत क्राइम संख्या 58/98 तथा 68/98 दर्ज करवाने के लिए उकसाने की हिम्मत दी। आखिर पुलिस और विरोधी दल ने शिकायत कर्ताओं को मनाने में सफलता हासिल की।

With the power of money, the "Opposition Group" could attain success in encouraging and tempting two more ladies and getting two more F.I.Rs registered by Meena Kumari of Gujarat, and Renuka Narkhel of Narnowl, Haryana, on 28th April, 98 and 14th May, 98 with Crime No. 58/98 and 68/98 respectively against Spiritual Brother Virendra Deo Dixit and spiritual sister Shanta Kumari. Finally the police and the conspirators could succeed in convincing the two ladies.

विरोधी दल द्वारा रचा गया षड़यंत्र, जिसमें कुछ महीनों का समय लगा होगा, जिसके परिणामस्वरूप कुछ सुप्रशिक्षित महिलाओं ने ता.16-04-98 से क्रमवार ढंग से पुलिस में शिकायतें दर्ज की थीं। जब कुछ और महिलाओं को इस षड़यंत्र में शामिल होने के लिए राज़ी करने के प्रयास विफल हो गए तब चतुर्भुज अग्रवाल, जो कि विरोधी दल के सक्रिय सदस्य हैं, उसने अपनी ही बेटी रिंकु द्वारा एक और बलात्कार संबंधी मामला दर्ज कराने का प्रयास किया, जो कि विफल हो गया; क्योंकि इन मामलों में सी.बी.सी.आई.डी. भी शामिल थी।

Well a considerable time has lapsed in giving a final shape to the well-drawn conspiracy resulting in sequential allegations right from 16-04-98. When readying some more ladies could not fructify, Chaturbhuj Agarwal, one of the active conspirators had come forward to instigate another rape case by his own daughter Rinku. By that time it was too late to instigate fresh rape cases as C.B.C.I.D has started their investigation in the rape cases.

कुछ असंभव बातें, जिनकी ओर से जाँच अधिकारियों ने अपनी आँखें मूँद ली हैं :

विरोधी दल के नेतृत्व में उक्त याचिकाकर्ताओं ने आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए इस घर में आने-जाने के बावजूद, उक्त बलात्कारों की जानकारी, जो कहानी बाद में बैठ गढ़ी गई थी, घर में रहने वाले किसी भी सदस्य को कभी नहीं दी और न ही उन्होंने ठोस षड़यंत्र को अंतिम रूप देने तक तथाकथित आरोपों की शिकायत नज़दीकी पुलिस थाने में की थी। इस बात का कोई संतोषजनक स्पष्टीकरण नहीं है कि शिकायतकर्ता महिलाओं ने एक वर्ष से भी अधिक की अवधि तक बलात्कार की शिकायतें क्यों नहीं कीं? बलात्कार की उक्त बनावटी तारीखों के बाद भी शिकायतकर्ता महिलाएँ ज्ञान प्राप्त करने के लिए सामान्य रूप से आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय में क्यों आती रहीं? इन बातों के कारणों को भी जाँच अधिकारियों द्वारा सुविधाजनक रूप से अनदेखा कर दिया गया। जाँच अधिकारियों द्वारा कम्पिल आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय में **लेडीज़ पुलिस-जनों के सक्रिय सहयोग से** तत्कालीन उपलब्ध आध्यात्मिक परिवार के कई सौ सदस्यों के बयानों को लगातार दो महीनों तक रोज़ रिकॉर्ड करने के बावजूद भी उन पर कोई महत्व नहीं दिया गया।

A few improbabilities to which the investigating officers have shut their eyes:

The complainant ladies despite the fact that they used to visit the Adhyatmik vidyalaya for acquiring knowledge even after the said to have been designated dates of rapes, the stories of which have been subsequently authored by the "Opposition Group", they had neither intimated about the said to have been occurred rapes either to the inmates of the Adhyatmik vidyalaya nor to the Police till such time when proper finishing touches were compiled to the conspiracies in a comfortable sequence. There also exists no satisfactory reason for the complainant ladies as to why they had not complained about the said to have been occurred rapes till more than a year had been lapsed. The investigating officers did not bother to enquire the reasons as to why the complainant ladies used to visit the "AVV" to acquire spiritual knowledge subsequent to the said to have been made up dates of rape. The factors have comfortably been overlooked by the investigating officers. Despite the fact that the investigating officers along with the Lady Police used to make regular recording of the statements of facts of hundreds of "AVV family" members for a period of two months, no importance has been attributed to the said statements for the reasons best known to them.

शिकायतकर्ता महिलाओं को यह शिकायत करने के लिए कहा गया कि बलात्कार के समय मदद के लिए चिल्लाने और रोने के बावजूद कोई उनकी मदद करने नहीं आया। यह भी आरोप लगाया गया, जिसकी संभावना ही नहीं है कि कमला देवी दीक्षित, जो शारीरिक रीति से उन महिलाओं से आधी ताकत वाली

भी नहीं थी, वह बलात्कार की शिकायत करने वाली महिलाओं को ज़बरदस्ती अपने हाथों से उठाकर भ्राता वीरेन्द्र देव दीक्षित के पास खींच कर ले गई हों, जिससे बलात्कार में आसानी हो।

The complainant ladies were stimulated by the "Opposition Group" members to strengthen their complaints with additional allegations that none out of the people residing in that congested Adhyatmik vidyalaya building have paid any attention during the course of the said to have been occurred rape, despite crying and shouting for help. The complainant women have also been dictated by the "Opposition Group" leaders to add some more absurdities in their statements before the police that spiritual sister Kamla Devi Dixit, who was not even half of the physiques of the complainant ladies; has lifted them with her hands and dragged them to Spiritual Brother Virendra Deo Dixit to facilitate rapes.

सभी मामलों में प्राधिकृत चिकित्सा अधिकारी से प्राप्त चिकित्सा रिपोर्ट्स, जिन्हें संलग्न किया गया था, उन रिपोर्ट्स को जाँच अधिकारियों ने ही नहीं, बल्कि कोर्ट के जजों ने भी दरकिनार कर दिया था।

The courts have genuinely discarded the medical reports annexed by the police as well the investigating officers, as they did not support any rapes against the complainants.

यह बात सच्चाई से दूर नहीं कि मीडिया आदि के कई तरीकों से, षड़यंत्रकारियों से प्रभावित होने के कारण सी.बी.सी.आई.डी. जाँच अधिकारियों ने सच्ची रिपोर्ट्स देने के स्थान पर रोचक कहानियाँ गढ़ी हैं, ताकि षड़यंत्रकारियों को विश्व के सबसे बड़े साक्षात् ईश्वरीय परिवार का अस्तित्व समाप्त करने में मदद मिल सके। इसका कारण वे अधिकारी ही बेहतर जानते होंगे।

It is not far from the fact that the investigating officers of the CBCID are well influenced by a variety of creations as spread over by media etc., and of course by the "Opposition Group" leaders; and they, instead of giving a true report, have authored interesting stories for the reasons known best to them, so that abundant support and way out is cleared for the conspirators to harass and eradicate the existence of the Ishwariya Family, the biggest family of the world.

कम्पिल आध्यात्मिक विश्वविद्यालय का भौगोलिक स्थान और शिकायतों की अजीबोगरीब प्रकृति :

इस संबंध में हमारी ओर से कुछेक शब्द प्रस्तुत करना उचित होगा, जो कि महत्वपूर्ण हैं। यह आध्यात्मिक परिवार, भीड़-भाड़ वाले एक उजड़े हुए ग्रामीण क्षेत्र में, टूटे-फूटे खंडहर-मकानों के बीच स्थित बहुत पुराना

एवं स्वयं भ्राता द्वारा अपने हाथों से निर्मित किया गया भवन था और इसमें ऐसा कोई एकांत कमरा नहीं था जहाँ ऐसे अपराध किए जा सकें।

The Geographical Location of Kampil Adhyatmik vidyalaya and the improbable mismatching allegations:

In this connection, we wish to spell out a few words which are of interest, from our side. This Adhyatmik Adhyatmik vidyalaya was situated in the Kampil village and one among the poor broken houses of the village; constructed by Baba with his own hands over a period of time and for the reason of the congestion of space, there was absolutely no space or a vacant room to carry out any kind of crime alleged herein unnoticed amidst the crowd of spiritual family members gathered for the purpose of spiritual knowledge.

देश के विभिन्न राज्यों के लगभग 150-200 बहनें, भाई और बच्चे कड़ाके की ठण्ड के मौसम को छोड़कर, किसी भी समय, इस ज्ञान-यज्ञ कुंड के **छोटे-से ढाई मंज़िला** मकान में गहन आध्यात्मिक ज्ञान से लाभान्वित होने के लिए अक्सर रहा करते थे। वह कमरा, जो कि बलात्कार का स्थान बताया जाता था, बहुत ही संकरा रसोईघर था, जिसमें घर-गृहस्थी के बहुत सारे सामान रखे हुए थे।

The house often remains filled with more than 150-200 sisters, brothers and children belonging to various parts of the country, during the periods other than winter, live in this two and half floored house belonging to the fire of sacrifice; in pursuance of spiritual knowledge. The small congested room which was said to have been place of rapes always remained tight with a lot of kitchen ware and other food items stored therein.

कमरे के ऊपरी हिस्से में खुले सीमेंट निर्मित रोशनदान और उनके नीचे बिना दरवाज़ों की खुली खिड़कियाँ थीं, जो स्टोररूम जैसा दिखाई देता था। भाई-बहनों से भरी ऐसी भीड़-भाड़ वाली जगह में यह बात संभव नहीं है कि किसी के रोने या चिल्लाने पर किसी भी आध्यात्मिक विद्यालय वासी ने ध्यान न दिया हो। यह भी नोट करने योग्य बात है कि विभिन्न राज्यों से आने वाले लोग ऐसी आवाज़ें आने पर अपने कान बंद नहीं रख सकते।

The upper portion of the said room has an open cemented ventilator and below it were open windows without doors and the room itself looks a store room. It is highly impossible and amazing from all corners of the technicalities to believe the created stories of the complainants that none of the people residing in that congested Adhyatmik vidyalaya building have paid any attention. It is very much absurd that

the people coming from various states have shut their ears during the said to have been occurred rape, despite crying and shouting for help.

इस बात पर विश्वास नहीं किया जा सकता है कि ऐसी कोई भी अप्रिय घटना होने पर प्रत्येक आध्यात्मिक विद्यालय वासी संबंधित प्राधिकारियों को सूचित किए बिना शांत बैठा रहेगा, जो कि पवित्रता पर आधारित इस आध्यात्मिक विश्वविद्यालय में अजीब-सी बात लगती है। दिनांक 16-04-98 के उस काले दिन से कमला देवी दीक्षित के जीवन में एक भी दिन ऐसा न रहा होगा जबकि उनका उत्पीड़न न हुआ हो और वह केवल अपने ईश्वर-प्रदत्त धैर्य के कारण ही सहन कर पाई होंगी ।

It cannot even be believed and looks odd that no one has reported the incidents to either senior members of the Adhyatmik vidyalaya as well Police authorities, whereas the "AVV" itself stands on the foundation of purity. There was absolutely no day passed on where Kamla Devi Dixit was not harassed since the black evening of 16th April, 98. It's only for the reason she could withstand the harassments in the backdrop of the courage accorded by Supreme God Father.

दस सदस्यीय आक्रमक दल ने भ्राता वीरेंद्र देव दीक्षित, शांता बहन और रवीन्द्र नाथ दास को सरकारी तंत्र द्वारा पूरे चार महीनों के लिए कैद में रखवाने में एवं मीडिया द्वारा जन समूह को भड़काने में अल्पकालिक सफलता प्राप्त कर ली, जिस अवधि में निचली अदालतों द्वारा आध्यात्मिक विद्यालय कम्पिल के अधिवक्ता की ओर से बीसियों से भी अधिकाधिक प्रभावशाली दलीलों के बावजूद भी बेल मंज़ूर नहीं की गई। जबकि इलाहाबाद हाई कोर्ट के माननीय न्यायाधीश ने परिस्थिति के गहन व संपूर्ण अध्ययन के पश्चात् भ्राता वीरेंद्र देव दीक्षित, शांता बहन और रवीन्द्र नाथ दास की बेल मंज़ूर कर ली।

The ten headed conspirators could succeed temporarily in provoking the locals through the media against Spiritual Brother Virendra Deo Dixit and sending him along with spiritual sister Shanta Bahan and brother Ravindranath Das to jail for a term of four months during which period the bail could not be obtained at the level of the lower courts despite a host of submissions of the effective legal supports by the learned lawyers. They could get bail from the High Court after a comprehensive study of the cases by the Honorable judge of the High Court of Allahabad.

दिनांक 22-9-98 को उच्च न्यायालय द्वारा निचली अदालत को दिया गया निर्देश, जिसके अनुसार उस तारीख से एक महीने के भीतर पक्षकारों को सुनने के बाद मुकदमे का निपटारा किया जाना था, निर्धारित अवधि के बीत जाने के बाद भी केसेस निपटाने में 27 अगस्त, 2012 अर्थात् पूरे 14 वर्ष तक सारे केस लम्बित किए जाते रहे।

The High Court of Allahabad in their Order dated 22-09-98 has directed the lower courts to dispose the cases within a period of one month after hearing the parties. However the disposal took 14 years period till 27th August 2012 when the final rape case was disposed against the complainants.

The next phase of the Conspiracy to be highlighted is that of Renuka.